

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुळे.

—: हस्त लिखित ग्रथ संग्रह :—

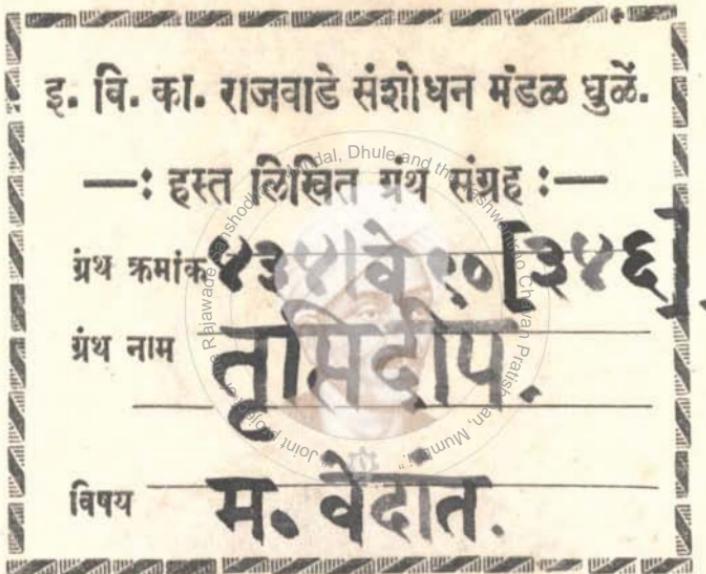
ग्रथ क्रमांक ४३४ वे १०३४६.

ग्रथ नाम

तुमदोप

विषय

म. वेदात.



(1)

श्रीगणेशायनमः॥३॥ न मोक्षिगुरुराया॥ मि नि रंतर असता
तु ज्ञीयापाया त्वा प्रवर्ते विलेकरावयात् मिदीपव्याख्यते॥४॥ कु
शाग्रेउदधीउपसंगेके विघडेज्ञमाकारणे॥ परि तु प्रवर्ते
विशिष्टे मिनेणे कवणे परि॥५॥ येकाग्रत्वपदीरमणा॥ हेचि
आवउबद्धुत करुनपरीतुक्षाभु निमनं काग्रंथारंभक
रविसि॥६॥ तु ज्ञावच्चने कृतकृत्तता॥ अताग्रंथाचितुपयो
गता॥ काश्चास्तवंजीश्रीमंता॥ आरंभविसि मजहाति॥७॥
तवस्वा मिच्चेएसे मनोगत॥ जापुरुषा कृत्यजालेसमात्य॥
तेण प्रारम्भ्या चाकरावाजंतभलेत रितीअसोनी॥८॥ ॥
प्रदत्तिआणि निवृत्तिदोहि कर्मद्विनजोरहि ततेण शास्त्रा
भ्यासनिश्चित॥ अहनिश्चीरमावे॥९॥ निविकल्पकरुनि
मन॥ सदासमाधि स्तु असाव आण॥ किंवावेदशास्त्रसमा

(1)

॥ श्री गणेशांगनम् ॥ ॐ वरमोत्तुषि गुरुराया ॥ मिनिरंत
र अस्तादुद्धीया पाया वात्र विले करावक्षा यादृ
सिद्धिपव्यारव्यतै ॥ ३ ॥ कुद्धावेतुदधी उपस्थेण कविद्युत
अहमाकारणे ॥ परितु प्रवचन्विद्वाह मित्रेण कवणे
परिएरा येकाभ्युपदीरमण ॥ हृचिओवेतु बहुत करुब
परी दुक्षोभउविमने कामथारंभकर्विलि ॥ ४ ॥ तु इयाव अ
चेवहत्कल्यता ॥ अत्यामंथाचितुपयागता ॥ काव्यास्तवे
जीश्रीमन्ता ॥ आरंभविस्मिज इति ॥ ५ ॥ तवस्वामित्रे
सोमनेगता ॥ ज्या पुरुषाकल्यजालं समासातेण प्रार
भाच्चाकसावाअंत भल्लदे रितो आसा जा ॥ ६ ॥ प्रवन्निआ
निवन्निहाह कर्मुहुजारहित तेष्वास्त्राभ्यासानि
श्चित ॥ अहुद्विद्वाद्यमावे ॥ ७ ॥ दिविकल्यकरुविमन

सदासम्पूर्चिस्थं असावेऽमा॥ किंवाद्राष्ट्रसंप्राप्ति
लेतोक्त्वं शोकत्वावेऽप्यहेसे श्रीकृष्णश्वरम् देव
द्वाजान्तर्गत्प्रवर्त्तिप्रवर्त्तिचिन्ता तरी सुखामवो वर्त्तय
मातिमदाकुदुवेऽप्यारव्यावाहना
द्वाष्ट्रोक्त्वाप्यव्याप्तव्यवधना। उत्तमज्ञामात्रपादना
काव्यस्फुर्तिमज्ञाद्याप्ति स्यचिन्तारजग्नावान्
श्वेतलगेकाव्यरचणोऽप्यावृत्तिगत्वाद्युपाधावान्
व्यव्याख्याभारतिनि॥ ३०॥ वेदार्थस्य प्रकाशेवतमेऽ
हादीद्वारयत्। पुस्थान्त्रवृत्तेयाव्यावृथं तु
द्विस्थरम् ११॥ न त्वा श्रामारकेतीर्थविद्या रप्यमुनि
न्वरो॥ क्रियते दसीदीपस्यव्याख्यानं तुवेनुम्

(२४)

यमठांदा॥२॥ दिग्ग। वेदाथोन्ते शक्तोकरुवं हृष्ट
 तोलतमजिवरिता॥ अण्चयुथ्सुनषार्थदेवा॥ अ
 साविज्ञाह प्यसुवेचरत्यादेव मस्त्कार॥ ३॥ भार
 तोदीर्थविज्ञाह प्यसावेष्वासासनमस्त्कारकर्त्तव्य॥
 वासदीपाच्चिव्यावरवा गुरु अनुग्रह कर्त्तव्य॥४॥
 मूलशतिष्ठोकरान्तच इदा भियो दयमस्ति-
 तिप्रस्तुष॥ किं रक्तस्यकामाय हरारमनु-
 संज्ञरद्॥ ५॥
 शापरुप्तमेते
 द्विकामाईस्ती
 लब्धेत

Joint Project of the Rajiv Gandhi Library, Mysore and the Department of Archaeology, Government of Karnataka

२

रे रिव राम राम
क्रम स्त्रीलोका च

कुरुत्यान् स गति

(3) द्वा। एहां ब्रूत इच्छा

स्मृप्त पूर्ण गंधा

तु मित्रेय अंथा

लैक्ष्मी ते पुरुष रा

द्वृप्णन्मक्षीय सा रा

लूणोवी गेक केल

ना या ता स्त्री वज्रा

कल्पिता विवरा

ना या राम भर्थ

सम्बिद्धा दां दमय

उत्तरा दुरुषि दां ता
व्रविच्चार्य दो। उत्तरा
दा। धआ त्मावं न्वि द्विज नीया
त्वा एव्या द्रु भाव एव्या द्रु
जन्म द्वारा तु ली व न्म द्वारा तु
भाव एव्या द्रु भाव एव्या द्रु
क्षया स आवी शृङ्खी चे
पुरुष रा द्वारा ता सु मध्ये द्वारा ता
पुरुष के। ना स
कुरुत्यान् स गति

(3A)

औ सें आणि ईश्वरा चें कल्पित के सें तें सांगता हेत।

प्रतिबिंबासाडी आणि संखर खट्टा सार इस्तु ॥ उसांन
 मायाज्ञा गोषु पादा नहाता ॥ ३ ॥ प्रकृति ही लग्नो वेद
 च माया संखर गुण मुद्दि अंगण मुद्दि करन दी ठाई भेद पा
 वत्ति संखर मुद्दि ॥ नेत्र लग्न गावा ॥ मिठ्ठि गंस लादिला अवि
ज्ञा लग्न गावा ॥ विजाहा ठाई प्रति विं बल जे ब्रह्म दै वन्धु ॥ ने
 यकाल ईश्वर लग्न व माया विल प्रविं बास दुस राजा
 दुस गावा अविद्या विल प्रति ॥ विजाका त्या सुह जी वलग्न गावा
ज्ञा लग्न गावा ॥ जाव देविल मुरती दिवि बल त्या रूप ठजी वला अस्य
 उम्मा दो घारे मिलु गंस दिवि बल त्या मह विजावा
 वें कल्पित करन त्या गावा ॥ असाव के रिपु दुर्वंक सेव सा

गतोहनामेऽ० इक्षणादिप्रवेशांताश्च छिरशेषकलिपतः॥

जाग्रदादिविमाहांताः च संस्त्रियोऽपि कलिपतः॥५॥

एति ग्रन्थे स इक्षत अस्या ज्ञानश्च विभादिकरन प्रवेशांत

जाग्रतीत हावर्णनकेलेते ए स्त्रीश्च छिते इश्वरकलिप

(4) तदेयजाग्रदादिश्च विमाहां पर्यंतवर्णत्वस्त्रादवश्च छिह्ना

या। आतापुराप्रकलशद्वान्नांथं संगतात स्को॥६॥ अमाधि

छानभूतामाकुटस्त्रोसंगचिह्नयं॥ पुरुष्याद्यासतो लंग

धीस्त्रज्ञावात्रपुरुषः॥५॥ अमलणिजेदिहित्रियाश्च ध्यान्त्वा हा

आम्याचेताईस्त्रुरला अमाचेअधिछान आम्याक्ताक्ता

लूणावे॥ असाज्ञो आमातो कुटस्त्रुहोय आसंगहोय

ज्ञानस्वरूपहोय यासि आणिजा वासि अन्वेष्यान्याद्या

सजालात्यासपुरुषलूणावे॥ जीवकोणासलूणावे हे ३

(६०)

कं कावयासी अै कावे कुद्धि आहे करने कल्पना ज्या कुटस्था
 वरह मानवत्या तेकुटस्था चैतन्य बुद्धि मध्ये विं वले या प्रति
 विं वास डीव भावजालात्याला पुऱ्य रुपलुणा वेकुटस्था स
 हिं विं द्वाभासकालटला। आदीं का आहो पुरुषलुटले
 असवाके व कवचिं द्वाभास्यत्तप जीवत्याला पुरुषलुणावे।
 शोऽ। स्वाधिष्ठानो विद्या केवजी वोधक्रियतन दुःके व
 लानिरधिष्ठानविभ्रांते स्वदाप्यस्मिद्दिवः॥५॥ इति॥ आ
 धिष्ठागजे कुटस्था चैतन्य बुद्धि मध्यत्या सही वजी वजी
 तेष्मा हा आहे करने स्वभावावस्था धरेजा दुःखजेत्या
 स अधिकारी होता। बुद्धाजी वचकाही बीबलाबाहे सु
 पाळु दरजी वजाव लुणा पतो भ्रम दर अधिष्ठागो वजी
 चुनकोठे भ्रम होव नाही। दोरी उनाधिकाल आहे दरजे तो
 वस्य सर्पभासत्ता दोरी वसता सर्पकाशाधरभास

होता यास्त्रवकुट स्त्रियाहा भास्त्रबोला वा आता अ
था इना सहित विवृजो या स्त्रीं सारादिकाचा अनुभव
दोष्को किंकरनबोलताता ॥३५॥ अधीष्ठाने स्त्रीजोशस
(5) युक्तं स्वमार्श मवत्त्रवेत् ॥ यदानदा हस्तं सारिरभिमत्त
दे ॥४॥४॥ कुटस्त्रियाहतचिद्धा भास्त्रजारिरद्यास
आपलेस्त्री स्त्रीरूपलेय एसेजे छामानिलोते छामा संसा
रिरेसा अभिमानवेतो ॥ क्षेत्रमां स्वदा स्यादिस्त्रकारा
द्युधिष्ठानप्रधानता ॥ यदानदा चिद्धात्मा हस्तं गो
स्त्रीतिकुरुध्यते ॥५॥५॥ आताज्या वेळे सेहुठ द्यस
हितचिद्धा भास्त्रजोतो मिथ्या आपणलयुनजे छाजा
स्त्रीजाआवेदकरितो आणि अधिष्ठानभुवकुटस्त्रिय
स्त्रीपाचाजे छात्वीकारितो ॥ जोवहोते छामिअसंगचि
दा त्मारेसा आपणजाणतो ॥ यथेआज्ञाकानिमाणजा

तिल द्या आदर्श के चाफ्हो का॥ प्रगो-॥ ना सं गो हुं कु ति युक्ता
कथमस्मिति चेत् अपु॥ ए को मु रव्या मित्यर्थि इति विधो हुं
मदाटिगा आठो जो असं गाचि दात्मा कुटस्थ जो व्या
चेठोई माकुटस्थ हो यहै साभहुं का रत्नभेके साधउ॥

(५१) कहा पिनयउ॥ ऐ सु अदां के चेत् तुर मु रव्य वर्ति कर
न अहुं प्रत्यय होता है॥ तेच सागतो तेर अहुं कारुता ज
आहेत॥ एक अहुं कारं मु रव्य आहे॥ आणिदोबे अहुं का
र अ मु रव्य आहेत॥ क्षेत्रो अन्यो न्या ध्यास स्त्रै पेण
कुटस्थ भास्यार्वपुना॥ येकी भूय भवे लमु रव्य स्वत्रे
मृणाप्रयुज्यते॥ १०॥ ३०॥ मुख्य रव्य अहुं कारा च स्व
स्त्रै पसागतात॥ कुटस्थ आणिदा भास्याहोहुं
चिस्वत्रै पेण अन्यो न्या ध्यासे करन ऐ क्य लपावदात॥

५ स्याएक्यत्वासवाच्वेकरुन अठंश्चाच्छाच्छामुरव्यार्थे
ल्लणवित्तया मुख्याथीचाच्यवहार कोउद्घटकेल
ज्ञान्करुरे का सर्वमुखाज्ञीचेठांडोलोल्यासकु
ठस्छक्रक्लत्ताता ॥३॥ औणिजावुकसाम्भावकरुलो
बाहे ॥ एसेविवेवाहानमुख्यज्ञेसवेप्राणिलेवेया
मुख्यभठंकारेच्यवहारकरिलाव ॥ कीभीचस
वेकरीभान्काआहिकरनसर्वमाच्यपरंदुमा
कोणआहेजथेनक्ल ॥ तामृठच्यवहारयेथेमु
ख्यअठंकारजाणावा ॥ प्रक्लो ॥ कीवथगाभासकु
ठस्छोतत्तवित्त ॥ यपूर्योयेणप्रयुक्तीहंहा
द्वेलोवेचवेद्विके ॥२॥ ॥३॥ आद्वामुख्यदानां ५

(31)

हं कार जे त्याचे स्वरूप सामता दा॥ चिदा भासल पण जे अ
 मे कात संबधी अहं हा वृतो वेग छा॥ आणि कुटस्थल लग जे हा
 अमुकात संबधी अहं कार ऐसा वेग छा॥ एस्ये दो छिंवे गवाल
 अकार त्यास अमुरव्य लगावे॥ यामुरव्याचे कारण सागतो
 की या चिदा भास अहं कारा स आणि कुटस्थल अहं कारा
 स दो अहं कारा स तेवे ताडो झागी जो दो दो ठाई॥ तो
 प्रयोग वेग छाके बोलतो॥ जे हा केदि क प्रसंग शा। श्वि
 येथे कुटस्थल अहं कारा स लग दो॥ आणि लोकी काचे
 ववहारि चिदा भास अहं कारि जो जो बोलतो जो झानी
 पुरुष जो त्याचा ठाई हे प्रमुरव्य अहं कारा चामि दो उचे
 रवटदिसतो आणि हेसर्वजवजेते कुटस्थल चिदा भास
 वेग दो जाण्य जमीकर्ता रोक्ति याव्यवस्तु हारा चे गई मुरव्य
 अहं कार जाणावा॥ आता झानी दो अहं कोरा चाप्रयोग दो

८

ठाई के साकरि तो रसेकरा वयास्त क्लो ॥ लोकी कव्य है वैरेह
 गद्धा मित्यादि के बुधः ॥ विविच्य वच्चिदा भास कृतस्त्रं संविव
 क्षादा ॥ १३ ॥ लोकी कव्य वहारा चेठाई मीचाल तो मीबाल तो
 मारुवा तो अद्धास अमुके कलठ तो इत्यादि क बोलान्चे
 ठाई जो अहं कार दो कृतस्त्रं वेग के जापु जन्मिदा
 भास जो जीवा आठाअहं कार हाय की व्यवहारी जा
 नी पुरुष हिं अहं कार कृतस्त्रं कडे लावित ना हिचि
 दा भासा कडे बोला बां ॥ लोकी ॥ असं गोहं जिदा भासि
 ति द्वास्त्री यद्विता ॥ अहं त्राव्य प्रयुक्ते ये कुटस्त्रं क
 वले बुधः ॥ १३ ॥ टिकी ॥ आदो कृतस्त्रं जिव अहं कार दा
 रवउ ॥ ठाच ज्ञाना जो तो वेदो तप्रवणे जनित ज्ञाने
 करने के वक्त्र जिदा भास वेग के करने के वक्त्र कृत
 स्त्रं जो तो ये मीकृतस्त्रं हाय असं गहो यज्ञि द्वासा ६

हा न स्वरूप होय मा॥ यानक्षणे करुन अहंशब्दा चाप्र
 योग घडवो लायुन च असं गज्जान रूप हेज्जान उ सन्न होना
 हे॥ येथे अशंका घेतलि की कुटस्तु जो बोलिना त्याचेठा
 ई मी असं गा दिकजे लाटले ते का कुटस्तु चे अज्ञान नि
 वानि साटि बोलिले का यास्तु पोळि लाटले की असं गा चढ
 पाचे स्वरूप चवो कुटस्तु होय त्याचेठा ई ज्ञान अज्ञान दोहिघ
 उतराहि॥ क्ला ०। ज्ञानिहो ज्ञानिते वामा भास स्ये वन चामजना॥
 तथा चक अमा भास्तु कुटस्तु साति बुध्या नूप १४॥ दिनां ज्ञान
 अज्ञान ज्ञाने चिदा भास कागला॥ आक्षयाचेठा ई नाहि॥ वरे असे
 ते हो लाटले ते कृचिदा भास वे ग वा॥ कुटस्तु हुने त रभासा
 वे ग वा जो तो करुना लाणाल मिकुटस्तु होय दे क्य ज्ञान त्यास
 कसे घडल जो त्या हुन वे ग कात्या सिअे क्य त वृत्त वृत्त गठेया
 स कहा पिन घडउ॥ या चा परिहोर॥ क्ला ०॥ नायदोष अद्विद्वाना

(8)

स कुरु स्तु क स्वभा व वा न् ॥ आभा सत्य मिथ्या त्रा स्तु कुरु स्तु
 त्रा व रोष ना द् ॥ १५ ॥ ८० ॥ त रचि दा भा स मी कुरु स्तु रे से न
 जा णे वे जो तो कुरु स्तु क स्वभा व वा न हो यह बांटे ॥ जै सा दर्प
 णी प्रति बि बला ॥ जो मुरवा भा सत्याचे च सत्य ते शशि रा वरि ल
 मुरवदे च हो य दर्पणा वि ल मिथ्या वा सा चि दा भा स मिथ्या ॥ अ
 र्हा का ॥ क्लो णा कुरु स्तु क सा ति बो धो य मिथ्या चे ज्ञाति को वे दे
 द् ॥ न हि सत्य वया भी छं र त्तु स पैण ॥ ६ ॥ ८० ॥ रे सी आ बां
 का जा लि कि चि दा भा सत्य ठले हा हो र ना ही कुरु स्तु नुन
 चि दा भा स वे ग के पण आधा घडव बा ही ॥ की कुरु स्तु स्वरूपा
 ठुन वे ग छ जे ते सर्व मिथ्या ते हा भा कुरु स्तु औ सा भा नि तो ॥
 हा रा चे डा ई क लि ला स्तु पूजो तो स पै छा णे धा व ता हे को ठे
 य उ दो ॥ से वे ब्रह्मी ठुन वे ग के का हि आसा वे ते र वे र ख मा गो वे
 अ झा ब द दो चे ठा ई झा झा स्तु र खे र पण ते क्षा औ क्या झा न ही ॥ ७

(8A)

लटके॥ ये थे अशंका॥ ज्ञान बडे हामि थाजो लेतर॥ लटक्या ज्ञान सं
 सारा चिनिवृत्ति कसि लगातळ॥ क्लो॥ ताट शेक्षापि वेधे वसेसा
 रो विनिवर्तते॥ यथा पक्षा नुपै हिरियाहुलोकि काजन्तः॥ १७॥
 टिन॥ औजात्या तै स्माच इलाने संसारा चिनि व्रनि द्यउते॥
 स्वज्ञामध्ये द्वय छीचावा द्युयेउन बोको को डिब सलाम गद्या घ
 बरा होउ निजागा जालाते हास्व छ्नाहिलट के आणि वार्ष ही
 लटिकालटिक्या वाघ ते लटक्या स्वज्ञाउ उठावते सेसंसा
 रलटिकाया चिनिवृत्ति हितव्या ज्ञाहौ के लियाविष ईलोकि
 कहुठहिआ हे॥ किमूर्ता सारिया श्रूतो डिउकरउया चेभूत
 याकाहु कडावो वाकु गठा कावा भाकरि चा औसी अर्दं का
 निको रुनसां प्रत बोल्णो॥ क्लो॥ तस्मादभास्तु पुरुषस्कुट
 स्थाविविच्यता॥ कुटस्थोस्मिति वेज्ञाहुं मर्ह तात्यभिधास्तु
 ति॥ १८॥ टिन॥ याकारणास्त्रवको कुटस्थजो तेचाचिदाभासा
 चेनिजं द्वरूप होय॥ यास्त्रवपुरुष शब्द वाच्य असा कुटस्थ

सहित चिदा भास छुमा याणे ॥ आप पामि अध्या भुत आठे ॥ क
 ट स्थ जो तो च स्यु होय ॥ असा विवेक लक्षणे करून मीच कर
 स्थ होय ॥ रेसे जाणा वयास यो गम होतो एसी मुक्ति च भुवि मध्य
 अस्मिन ब्रातिले खाचा हाअर्थ जाका अस्ता अयं पदजे खाचा अ
 र्थासन्सा गतात ॥ क्रोण ॥ असं दिग्धा विपर्य स्त वोधो दहाम्बी
 ह्यते ॥ तद्वत्रतिगिर्णदुमय मिल्या भिधी यते ॥ ११ ॥ दिनो किका
 हाप्रसि द्वे हेजा तो च हाआत्मा खपको हुदे हच आपण अहायामो
 छिस संशय नाहि ॥ आणि विपर्य ही नाही संशय लु ॥ औसा मीहारु
 हहोय की न केअसा हेहाचे अमलामुकास संशय नाहि विपर्य
 लु ॥ औसा मादे हहान हेहादहुगाठव होय अथवाभृतो होय अ
 सा विपर्य हेहाम्बी मूढास डेसा डेसा ना हि तेस्मादोध प्रयगाता
 देहादि काचा स्पाहा जो याचाठा ईसंशय विपर्य यरहित जाला
 पाहिजे की माहाकुट स्थ परब्रह्म च होय रेसे जाणा वे लालु

Palan Jade Chinchaman Margali and the Rosewater Pot
 Chitravati

(9A)

सूक्तशून्यमध्ये अयं पश्चयोगजो त्याचा अर्थ ओसेजे
 द्वावेदमोक्षसिद्धिचेजाणा वे ॥ यामृकपदाभिप्रायास
 आच्यार्यसंभविक्षेण ॥ हेहामहान्देहामहान्देहामहा
 नवाधकं ॥ अमन्नेवभवत्यस्य सनेष्ठविपिमुच्य
 ते ॥ ३० ॥ इति ॥ मीमनुष्ट्राओहेहेसेहेहामहावीढ़उआक्ष
 उभवजेसा आहे ॥ देहामजानसमृक्तउडउनमीव्रें
 लचहोयऐसेदेहामहेहेहेहेसेब्रलामुज्यासद
 उहेयत्यात्मामोक्षाचिद्धावनसताहितोमुच्यके ॥ कीसं
 साराच्या हेअज्ञानयाअज्ञानाचेस्वरूपका मीहा
 ओटणातदेहेयतेदेहभावउडउना ॥ कीमीहेहेनके
 मीब्रलायाज्ञानेअज्ञानास्वराधीतकेले ॥ श्लोग ॥ अय

(१०)

भिल्लियपरोक्षतुमुच्येतेचवहुच्यतां ॥ स्वयं प्रकाशत्तेवन्य
 मपरोक्षसदायतः ॥ २३॥ ४०॥ आशंका ॥ घेउनउन्नरदे
 दात ॥ मुक्तपदीअयंलाणवा ॥ अपरोक्षत्वद्वडले ॥ न
 रते खरेच ॥ स्वयं प्रकाशन्वज्जेतेसदा अपरोक्ष
 चआहे ॥ आशंका ॥ आठोआमा स्वयं प्रकाशचिदपल्ल
 युनबिल्लिय अपरोक्षत्वागी कारजाला अयंओस्यामु
 क्तपदिच्चेअभिन्नायंवर्णनी अपरोक्षत्वात्म्यास
 बोलिलेतेथे अपरोक्षसंबंधापरोक्षहोहोते ऐसेही
 हीसोन्नआलेदेक्काजानअज्ञानज्ञानात्मयत्वही
 आत्म्यास आलेहेकेसेतद्देहेघेलाणुवा ॥ ५०॥ घ
 रोक्षमपरोक्षन्नज्ञानमज्ञानमित्यदा ॥ नित्यापरो



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com